संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०२५
वर्ष : ३५ अंक : ३ (निरंतर अंक : ३९३)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पर्व-त्यौहार विशेष

पंच-पर्वों का गुलदस्ता दीपावली पर्व यह संकेत देता है कि पंच-इन्द्रियों में, पंच-विकारों में भटकनेवाला जीव पंचामृत का (अमृतसदृश इन पाँच दिनों का) उपयोग करके पंच-विकारों को नियंत्रित करके, पंच-कर्मेन्द्रियों, पंच-ज्ञानेन्द्रियों, पंच-प्राणों का संयम करके महापुरुष बन सकता है, आत्म-माधुर्य में पहुँच सकता है। - पूज्य बापूजी

ऐसी दिवाली मनाओ कि आपकी सदा दिवाली हो जाय

१८ से २३ अक्टूबर ४

दीपावली पर लक्ष्मीप्राप्ति की साधना-विधि ३४

इतनी बात पकड़ लो तो बस यूँ उड़ान ! - पूज्य बापूजी

अथर्ववेद का मंत्र है :

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।

(अथर्ववेद : कांड ६, सूक्त ६४, मंत्र १)

भावार्थ है : प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह ज्ञान प्राप्त करे । सभी परस्पर मिल-जुलकर रहें । बिना किसी संकोच के हृदय से एक हो जायें । सभी उत्तम संस्कारवान हों । जिस तरह हमारे पुरखे (दिव्यजन, ऋषिगण) अपने कर्तव्यों का पालन करते रहे हैं उसी प्रकार हम भी सदैव अपना कर्तव्य पूरा करते रहें, परमात्म-ज्ञान, आनंद पाते रहें ।

आज गलती क्या होती है कि हम अपना कर्तव्य नहीं निभाते, दूसरे को बोलते हैं, 'तेरा यह कर्तव्य है, वह कर्तव्य है ।' दूसरे का कर्तव्य दिखाना कोई बड़ी बात नहीं, अपना कर्तव्य निभायें । ईश्वर में, सत्शास्त्र में, सद्गुरु में श्रद्धा... उनके बताये मार्ग के अनुसार कर्तव्य... मनमाना कर्तव्य नहीं । यह तो शराबी भी बोलेगा कि 'मेरा कर्तव्य है दोस्तों के लिए महफिल रखना...' नहीं ! शास्त्र-अनुरूप कर्तव्य होना चाहिए ।

कर्तव्य यह है कि मिली हुई योग्यता का दुरुपयोग न करें । दूसरे के अधिकार की रक्षा करें और अपने अधिकार की परवाह न करें* । दूसरे के पतन में हमारा हृदय पीड़ित हो और हम उसके उत्थान में लग जायें यह कर्तव्य है । दूसरा पतित हुआ और हम उसके पतन का फायदा उठाकर बड़े बने तो यह अकर्तव्य है । जैसे आपका पूरा शरीर आप ही हैं ऐसे ही पूरा ब्रह्मांड आप ही हैं, एक ही सत्ता है । आप अपने पैर का नुकसान करके आँख का भला नहीं कर सकते । पैर की भलाई में आँख की भी भलाई है, पेट की भलाई में पैर की भी भलाई है । परस्पर मंगल... तो कोई बुरे रास्ते जाता है तो उसको सहयोग नहीं करें, बुरे रास्ते से अच्छे रास्ते लाने में सहयोग करें ।

लेकिन पुरानी आदत है कपट करने की, भिड़ाने की, अधिकार पाने की, वाहवाही की इसलिए सब कठिन हो जाता है । बेईमानी के लिए, अहं पोसने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और इससे जो मिलता है वह टिकता नहीं । अहं ईश्वर के चरणों में अर्पित करके अहं-त्याग किया और **परस्परं भावयन्तः** - एक-दूसरे को निःस्वार्थ भाव से उन्नत किया तो सभी आपको चाहेंगे, आप सभीके प्यारे हो जायेंगे । जो सभीका प्यारा है उसीके (आत्मा-परमात्मा के) नाते आप संसार में अपना कर्तव्य करो ।

ज्ञानयुक्त, संयमयुक्त, स्नेहयुक्त, सेवायुक्त, सत्संग-युक्त हो जायें बस ! इतनी बात पकड़ लो तो बस यूँ उड़ान ! करोड़ों जन्मों में जो चीज नहीं मिली वह इसी जन्म में मिल जायेगी ।

★ इसका तात्पर्य अपने अधिकार के प्रति अनासक्त होने से है, व्यावहारिक जगत में लापरवाह होकर कर्तव्यपूर्ति हेतु मिले अपने अधिकारों को छोड़ पलायन होने से नहीं है ।

ऐसी दिवाली मनाओ कि आपकी सदा दिवाली हो जाय

पर्व विशेष

१८ से २३ अक्टूबर तक दीपावली पर्व है। इसके लौकिक व आध्यात्मिक महत्त्व के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

सामाजिक दृष्टि से देखा जाय तो व्यापारी दिवाली के दिन हिसाब-किताब मिलान करते हैं, सँवारते-सुलझाते हैं । धनतेरस की संध्या को लक्ष्मी-पूजन करते हैं। महारात्रियों के दिनों में मंत्रजप करने से शीघ्र सफलता होती है । शारीरिक दृष्टि से देखा जाय तो दिवाली के दिनों में सर्दियाँ प्रारम्भ होती हैं । पित्त व वायु दोष को निवृत्त करने के लिए शरीर को मिष्टान्न की आवश्यकता है इसलिए ऐसे पदार्थ इस पर्व पर खाने-खिलाने की परम्परा है। शरीर को मजबूत करने का संकेत देनेवाला यह पर्व है।

दिवाली कब से शुरू हुई ? बोले : 'भगवान श्रीराम रावण-वध के बाद अयोध्या में आये तो लोगों ने घर-मकानों की, अड़ोस-पड़ोस की, गली-कूचों की साफ-सफाई की, दीप प्रकटाये, मीठा मुँह किया और अभिवादन किया तब से शुरू हुई । लाखों वर्ष हो गये श्रीरामजी को धरती पर प्रकट हुए ।' दिवाली कब शुरू हुई इस विषय में अन्य भिन्न-भिन्न मत भी प्रचलित हैं।

पंच पर्वों का पुंज

दिवाली ५ पर्वों का झुमका है - धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दीपावली, बलि प्रतिपदा, भाईदूज।

धनतेरस : धनतेरस के दिन सुबह उठकर भगवान नारायण का चिंतन करो और संकल्प करो कि 'आज हम महालक्ष्मी की आराधना करेंगे।'

संध्याकाल में लक्ष्मीजी की प्रतिमा या लक्ष्मीजी के सिक्के का पूजन किया जाता है, लोग पंचामृत से स्नान कराते हैं और प्रार्थना करते हैं कि 'हे माँ महालक्ष्मी ! जिस पर तू प्रसन्न होती है उसको तू सन्मति देकर सत्यस्वरूप नारायण का दर्शन करा सकती है। हे माँ ! हमारे घर में तुम निवास तो करो पर नारायण की कृपासहित ।'

जो साधक नारायण-रस में डूबता है परम पवित्र महालक्ष्मी उसके इर्द-गिर्द मँडराती है, वह साधक सिद्ध हो जाता है। फिर उसकी चरणरज भी लोगों का भाग्य बदलने का काम कर देगी । यह साधक की दृष्टि की दिवाली है। बाहर की दिवाली तो हर १२ महीने में मनायी जाती है परंतु साधक की दिवाली हर रोज मनायी जा सकती है।

नरक चतुर्दशी : इसकी रात्रि को (१९ अक्टूबर को) मंत्रजप करने मात्र से मंत्र सिद्ध होता है। इस दिन की रात और दीपावली की रात मंत्र-जापकों के लिए वरदानदायी रात्रियाँ हैं।

इस दिन (२० अक्टूबर को) तेल की मालिश करके सूर्योदय से पूर्व स्नान करना चाहिए। सूर्योदय के बाद जो स्नान करता है उसके पुण्यों का क्षय माना गया है।

इस दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया और १६ हजार कन्याओं को उसकी कैद से छुड़ाया था, अपनी शरण दी थी। वैसे ही आप भी चित्त के नरकासुररूपी अहंकार को आत्मकृष्ण की शरण भेज दो ताकि उसका नाश हो जाय और हजारों की संख्या में जो वृत्तियाँ उसके अधीन हैं वे

कैसी सर्वहितकारी है भारतीय संस्कृति की पर्व-त्यौहार व्यवस्था !

सांस्कृतिक गौरव

विविधतापूर्ण एवं सर्वहितकारी ४० मुख्य एवं गौण रूप से सैकड़ों पर्व-त्यौहार-उत्सवों की शृंखला भारतीय संस्कृति को छोड़कर भूतल की अन्य किसी सभ्यता में नहीं है । यह व्यवस्था मन-बुद्धि से उपजी हुई नहीं है बल्कि परमात्मा की दिव्य प्रेरणा से ऋषि-मुनियों के माध्यम से प्रकट हुई मानवमात्र के हित की सुव्यवस्था है ।

भारतीय संस्कृति के पर्व-त्यौहार-उत्सवों का उद्देश्य है कि प्राणिमात्र स्वस्थ रहे, जीवन में छिपा जो मधुर आनंद, आत्मिक आनंद-उल्लास है वह जागृत हो, पारिवारिक तथा सामाजिक सौहार्द एवं व्यवस्था बनी रहे और बढ़े । समाज में सर्वत्र प्रेम, सुसंवादिता और आपसी मेल-जोल का माहौल रहे । जीवन सहजता से सुखमय बन सके, अशिष्टता से शिष्टता की ओर बढ़े, विकृति से संस्कृति की ओर बढ़े, बिखराव से एकत्व की ओर बढ़े । मनुष्य जहाँ है वहाँ से ऊँचा उठकर उन्नति की ओर यात्रा करता जाय, ईश्वर के दैवी विधान के अनुसार जीवन जिये, इसके लिए हमारी भारतीय संस्कृति है । दैवी विधान से दूर जो जीवन है वह ईश्वर के मंगलमय, कल्याणकारी दैवी विधान की ओर मुड़े यही भारतीय संस्कृति का उद्देश्य है ।

भारतीय संस्कृति की जो परम्पराएँ हैं, रीति-रिवाज, वैदिक सिद्धांत हैं वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्राप्त होते हुए, एक पवित्र, सहज ज्ञानगंगा के रूप में आगे-आगे प्रवाहित होते हुए मनुष्य के जीवन को आनंदमय, सुखमय बनाते रहे हैं । अरे, इस वैदिक संस्कृति को सामान्य मत समझना । यदि यह सृष्टि, यह पृथ्वी, यह विश्व-ब्रह्मांड - सब कुछ किसी आधार पर टिका है और चल रहा है तो वह हमारे सृष्टिकर्ता प्यारे परमात्मा के वैदिक सिद्धांत पर टिका हुआ है । इस वैदिक सिद्धांत का विस्तृत रूप हमारी वैदिक संस्कृति है ।

सनातन धर्म एवं संस्कृति की व्यवस्था मजहब या रिलिजन, जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय के भेदों से परे मानवमात्र, प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारी व्यवस्था है । इसी कारण भारतीय संस्कृति के पर्व-त्यौहार प्राचीन काल से ही विश्व में कई जगह मनाये जाते थे इसके सबूत आज भी मिलते हैं । वर्तमान में भी अनेक देशों में होली, दिवाली, गुरुपूर्णिमा आदि पर्व-त्यौहार अपने-अपने ढंग से मनाये जाते हैं अथवा जहाँ लुप्त हो गये थे वहाँ पुनः मनाये जाने लगे हैं ।

पर्व के दिनों में ग्रह-नक्षत्रों के विशेष योगों एवं पुण्यदायी तिथियों के अनुसार व्रत-उपवास, जप-पाठ, मंत्रोच्चारण का एक विधान बनाया गया है जिससे सात्त्विक वातावरण बने, मानव-जीवन में सत्त्वगुण की वृद्धि हो, हृदय में आनंद की प्राप्ति हो और लोग आत्मज्ञान के अमृत का पान करके आत्मविश्रांति भी पा सकें । तिथियों, योगों के अनुरूप क्रियाएँ करके प्रतिकूल फलों से बचकर ज्यादा-से-ज्यादा पुण्यलाभ, आनंदलाभ, सत्त्वलाभ पाया जाय ऐसा वैदिक संस्कृति का मंगलकारी सद्भाव है इन पर्व-त्यौहारों के पीछे ।

मनुष्य-जन्म का उद्देश्य है कि समस्त दुःखों की निवृत्ति सदा के लिए हो जाय और परम आनंद, सुख, शांति की सदा के लिए प्राप्ति हो जाय । व्यावहारिक जीवन में आनंद-उल्लास छलकाना

धन, स्वास्थ्य और प्रसन्नता पायें एक रात्रि में

६ अक्टूबर को शरद पूर्णिमा है । इसकी महत्ता व इस दिन किये जानेवाले विशेष प्रयोगों के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

शरद पूनम को चन्द्रमा पृथ्वी के विशेष निकट होता है । इस पूनम की रात को लक्ष्मीजी का पूजन और जागरण किया जाता है ।

६ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा पर विशेष

इस दिन मध्यरात्रि को वर देनेवालीं धन की देवी लक्ष्मी 'कौन जागता है ?' ऐसा सोचते हुए पृथ्वी पर विचरण करती हैं और जगनेवाले को धन देती हैं, कृपापूर्ण दुलार करती हैं । लक्ष्मीजी के 'को जागर्ति' अर्थात् कौन जागता है कहने के कारण इस व्रत का नाम 'कोजागर' पड़ा है ।

तुम लक्ष्मीपति को दुलार करो । मध्यरात्रि तक जागरण करो । चन्द्रमा की शीतलता और सौंदर्य जिस सुंदर परमात्मा की सत्ता से है उसी परमात्मा का सौंदर्य व शीतलता अपने अंतःकरण में प्रकट होने दो ।

इस दिन प्रसन्न रहना, उछलना, कूदना, नाचना, गाना यह सब अच्छा है लेकिन इसके पीछे सदाचार की सुगंध होनी चाहिए । भजन, ध्यान, सत्संग का सुंदर समन्वय होना चाहिए । इससे अपना चित्त पवित्र होता है । अशांत व्यक्ति भी पूनम के चन्द्रमा को देखे अथवा चन्द्रमा की रोशनी में थोड़ा टहले, विचरण करे तो उसकी अशांति कम हो जाती है । बुद्धि का मालिक देव सूर्य है और मन का मालिक देव चन्द्रमा है ।

चन्द्रमा में भगवान की विशेष आभा है । भगवान कहते हैं :

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ।।

'मैं रसमय (अमृतमय) चन्द्रमा होकर समस्त औषधियों अर्थात् वनस्पतियों का पोषण करता हूँ ।'

(गीता : १५.१३)

शरद पूनम की रात को आप भोजन मत बनाना; चावल पकाना फिर उसमें दूध डाल देना । एक-दो उफान आ जायें, बन गयी खीर । एक सदस्य के लिए २ काली मिर्च, ८ सदस्य हैं तो १६ काली मिर्च खीर बनाते समय उसमें डाल देना । रात्रि ९ बजे खीर तैयार हो जाय । रात्रि ९ से १२ के बीच की चन्द्रमा की जो किरणें हैं वे अमृतवर्षी होती हैं, आनंद और आरोग्य के कणों से भरी होती हैं । सूती मलमल का (सिंथेटिक मलमल नहीं) कपड़ा ढाँककर बर्तन चाँदनी में रख देना । हर आधे घंटे में थोड़ा हिला देना । चाँदी के चम्मच से हिलाओ तो और अच्छा है । सोने का कोई गहना गर्म पानी से धो-धा के खीर बनाते समय उसमें डाल दो तो और अच्छा है किंतु उसमें कोई नग नहीं होना चाहिए ।

लोहे की कड़ाही अथवा पतीली में खीर बनाओ तो लौह तत्त्व भी उसमें आ जायेगा । इलायची, खजूर या छुहारे डाल सकते हो लेकिन बादाम, काजू, पिस्ता, चारोली (चिरौंजी) ये रात को पचने में भारी पड़ेंगे । खीर १२ बजे के बाद भगवान को भोग लगा के प्रसादरूप में खा लेनी चाहिए । परंतु देर रात को खाते हैं इसलिए थोड़ी कम खाना ।

चंदा की चाँदनी सफेद, दूध सफेद, चावल

विदेशी भी कर रहे भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता की सराहना

समसामयिक
Current affairs

सांस्कृतिक अध्ययन एवं डिजिटल अभिलेखन करनेवाले 'हिन्दू हेरिटेज नेटवर्क' के नवप्रकाशित आलेख में भारतीय कालगणना की महिमा पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि 'ऐसे विश्व में, जहाँ ग्रेगोरियन कैलेंडर (अर्थात् पश्चिमी कैलेंडर) का प्रभुत्व है, विक्रम संवत् पंचांग प्रकृति, ब्रह्मांडीय घटनाओं और संस्कृति से अपने गहरे जुड़ाव के कारण विशेष पहचान रखता है। भारत की कालगणनात्मक परम्पराएँ चान्द्र, सौर और चान्द्र-सौर (lunisolar) इन प्रणालियों के समन्वय का समृद्ध मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जो 'सूर्य सिद्धांत' और 'वेदांग ज्योतिष' जैसे प्राचीन वैदिक ग्रंथों में निहित ज्ञान पर आधारित हैं। ये प्रणालियाँ खगोलीय पिंडों (celestial bodies) की गतियों को सटीक रूप से मापती हैं। इसके विपरीत ग्रेगोरियन कैलेंडर केवल सौर-आधारित है और अपेक्षाकृत कम सटीकता के साथ विकसित हुआ है।

१९५७ में भारत ने 'शक संवत्' को राष्ट्रीय पंचांग के रूप में अपनाया, जिसका ग्रेगोरियन प्रणाली से आंशिक रूप से मेल कराया गया किंतु यह सांस्कृतिक प्रासंगिकता को सुरक्षित रखने में सीमित सफलता ही प्राप्त कर सका। कई विद्वान और पंचांग-विशेषज्ञ विक्रम संवत् पंचांग को भारत के राष्ट्रीय पंचांग के रूप में अपनाने का समर्थन करते रहे हैं कारण कि वह वैज्ञानिक आधारों पर टिका है और सांस्कृतिक निरंतरता तथा जीवंत विरासत का प्रतीक है। विक्रम संवत् पंचांग अतीत का अवशेष नहीं है बल्कि यह एक परिष्कृत, समग्र और वैज्ञानिक प्रणाली है, जो हमारे जीवन का प्राकृतिक लय, खगोलीय यांत्रिकी (celestial mechanics) और धार्मिक मूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।'

सुविख्यात अमेरिकी खगोलशास्त्री कार्ल

सेगन कहते हैं : ''हिन्दू धर्म विश्व के उन महान धर्मों में से एक है जो इस विचार को समर्पित है कि ब्रह्मांड स्वयं असंख्य बार नष्ट होता है और पुनः उत्पन्न होता है। यह एकमात्र ऐसा धर्म है जिसकी कालगणनाएँ आधुनिक वैज्ञानिक ब्रह्मांड-विज्ञान से मेल खाती हैं। भारतीय कालगणना के अनुसार ब्रह्मांडीय समय-चक्र हमारे सामान्य दिन-रात से लेकर ब्रह्माजी के एक दिन और एक रात तक चलते हैं, जिसकी अवधि ८.६४ अरब वर्ष है। यह अवधि पृथ्वी व सूर्य की आयु से अधिक और बिग बैंग★ के बाद से बीते समय की लगभग आधी है। और भारतीय खगोलशास्त्र में इससे भी अत्यंत दीर्घ कालगणनाएँ विद्यमान हैं।''

प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान डेविड एडविन पिनग्री अपनी साहित्यिक कृति में लिखते हैं : ''भारतीय

★ आधुनिक विज्ञान 'बिग बैंग सिद्धांत (big bang theory)' के अनुसार यह प्रतिपादित करता है कि दृश्य ब्रह्मांड का विस्तार एक निश्चित समय पर एक कण (singularity) के विस्फोट से आरम्भ हुआ और ब्रह्मांड १३.८ अरब वर्ष पुराना है। (जबकि सनातन धर्म का विज्ञान सृष्टि को अनादि मानता है।)

ईसाई धर्म से सनातन धर्म में आये सज्जन ने इंटरव्यू में खोली धर्मांतरण उद्योग की पोल

– पत्रकार बिमलेन्द्र तिवारी, सम्पादक, 'दैनिक अनादि मिरर' समाचार पत्र

ईसाई धर्म से सनातन धर्म में आये तेलंगाना के एक परिवार का हाल ही में सोशल मीडिया पर एक विडियो वायरल हुआ, जिसमें वे पदयात्रा कर देशवासियों को अपने सनातन धर्म के प्रति एकनिष्ठ रहने का संदेश दे रहे हैं। इस परिवार के मुखिया श्याम (पूर्व में सैमसन) ने १० वर्ष पहले वेद, उपनिषद्, पुराण आदि शास्त्र पढ़े-समझे और हिन्दू धर्म अपनाने का निश्चय किया। धीरे-धीरे उनके परिजन भी हिन्दू धर्म के अनुयायी बन गये।

ताजा खबर
Breaking News

हिन्दू सम्मान फाउंडेशन के प्रतिनिधि की श्याम के साथ हुई बातचीत के कुछ अंश :

प्रश्न : दक्षिण भारत में धड़ल्ले से धर्मांतरण हो रहा है, मुख्य रूप से गरीब हिन्दुओं का ईसाइयत में। तो यह कैसे होता है ?

''असल में यह जो क्रिश्चियनिटी चल रही है उसमें वे पैसा दे रहे हैं। यदि बैपटिज्म लेते हैं तो १० हजार या ५ हजार एक परिवार को मिलता है। फंड्स आते हैं चर्चों में कि इस परिवार को इतने देने हैं साल में, उस परिवार को इतने देने हैं। बैपटिज्म लेने से पहले पादरी पैसा देंगे, ज्यों ही आप कन्वर्ट हुए तो वे पैसा लेंगे।''

प्रश्न : हम देखते हैं कि पादरी लोग भारत में गरीब लोगों को चमत्कार दिखा रहे होते हैं स्टेज पर, क्या वह सच होता है या झूठ ?

''वह पूरा स्टेज्ड (पूर्व-नियोजित) होता है। मान लो कि कोई महिला चर्च में गयी, पादरी के आदमी उसके पास आ के बैठेंगे, पूछेंगे : 'आप कहाँ से हैं ? आपका नाम क्या है ? आपको क्या प्रॉब्लम है ?...' सब जानकारी लेने के बाद पूरा मैसेज उधर चला जाता है स्टेज के ऊपर पादरी के पास। तो पादरी उसे उधर से बुलाता है कि 'मेरे को गॉड ने बोला है कि यहाँ एक महिला है, उसका नाम आरती है (अमुक है)। गॉड बुला रहे हैं, इधर आ जाइये।' फिर उसको बोलता है, 'तुमको यह प्रॉब्लम है, वह प्रॉब्लम है...' और उसके लिए प्रेयर करता है। अगर वह गिर जाती है तो कहता है, 'गॉड का चमत्कार है' और गिरी नहीं तो कहता है, 'इसके अंदर शैतान है।' पहले से प्लानिंग के तहत आसपास कुछ लोग गिरते हैं तो वह भी सोचती है 'सब गिर रहे हैं, मैं भी गिर जाऊँ।' तो इस तरह बेवकूफ बनाते हैं।

मैंने दूसरे चर्च में भी देखा है। उधर ट्रेनिंग होती है। पादरी बोलते हैं : 'मैं ऐसा कर दूँ तो आप गिर जाना, आज के लिए आपको ५०० रुपये दे देंगे।' किसीको बोलते हैं : 'आप आना और बोलना, 'मेरे पेट में बहुत दर्द था। पादरी ने प्रेयर की तो पूरा चला गया।' ऐसी ट्रेनिंग चलती है पीछे चर्च में।''

कहीं नाटकीय चमत्कार दिखाकर तो कहीं हिन्दू देवी-देवताओं, साधु-संतों के प्रति अविश्वास का जहर सींच के तथा हमारी वैज्ञानिक परम्पराओं, साधना-पद्धतियों व पवित्र प्रतीकों को ढकोसला बता के अपना उल्लू सीधा करनेवाले विधर्मियों की काली करतूतों की पोल इससे पहले भी खुल चुकी है। उल्लेखनीय है १९८६ में एक

प्रह्लादजी का विवेक, वैराग्य व ज्ञान वर्धक उपदेश

(पराशर-मैत्रेय संवाद)

शास्त्र दर्पण

बाल व युवा वर्ग हेतु विशेष पठनीय-मननीय

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि भक्त प्रह्लाद ने दैत्यपुत्रों को सर्वव्यापक परमात्मा का भजन करने का उपदेश दिया, साथ ही मनुष्य-जन्म दुर्लभ है और शरीर दुःखरूप है इस पर भी प्रकाश डाला । अब आगे...)

पराशरजी अपने शिष्य मैत्रेय को आगे बताते हैं :

प्रह्लाद ने कहा : ''हे दैत्यपुत्रो ! जो भजन, दान, तप आदि नहीं करता उसको अवसर चूकने पर मृत्यु के समय अंतकाल में पश्चात्ताप ही होता है । वह माता के गर्भ में जठराग्नि (गर्भाग्नि) आदि निमित्तों से महान दुःखों को पाता है । गर्भ में सिर नीचे पाँव ऊपर होते हैं, मल-मूत्र के कुंड में पड़ा रहता है इत्यादि अनंत दुःखों को पाता है । पुनः बहुत दुःखी होने पर गर्भ के दुःख से छूटने के लिए भ्रम से अपने चैतन्यस्वरूप से भिन्न परमेश्वर की कल्पना करके प्रार्थना करता है कि 'हे सच्चिदानंदस्वरूप परमात्मा ! पूर्व में मल-मूत्ररूप अनेक देहों में देहाभिमान ही मैं करता रहा हूँ, इसी देहाभिमान का ही फल मुझको पुनः-पुनः गर्भवास है । जो मैं मल-मूत्ररूप देह का अभिमान नहीं करता तो दुःखरूप गर्भवास को नहीं प्राप्त होता ।'

इसीसे सर्व दुःखों का कारण देहाभिमान ही है, अन्य नहीं । इससे हे बालको ! तुम कदाचित् भी देहाभिमान नहीं करना किंतु आपसहित सर्व नाम-रूपात्मक जगत को विष्णुरूप आत्मा जानो तो जन्म-मरणरूप बंधन से छूटोगे । देहाभिमान त्यागे बिना अन्य तप आदि साधनों से बंधनरूप संसार से नहीं छूटोगे । जो इस दुर्लभ मनुष्य-शरीर में शिश्नोदरपरायण होकर[1] मूलस्वरूप आत्मा को न जानोगे तो कूकर-शूकर की अनंत दुःखमय योनियों को प्राप्त होओगे, मनुष्य-जन्म पाना तुम्हारा निष्फल हो जावेगा । चिंतामणि अकस्मात् किसी पुण्य-प्रताप से किसी पुरुष के हाथ आये और वह मूर्खता करके अपने प्रयोजन को न साध के उसको निष्फल खो देता है तो यह अत्यंत नालायकी का काम है । **अतः मनुष्य-देह को पाकर विचार करना कर्तव्य है कि 'मैं कौन हूँ ? यह देह आदि प्रपंच क्या है ? कहाँ से आया हूँ ? कहाँ जाऊँगा ?'** इस प्रकार अपने-आपको नहीं जाना तो मनुष्य-देह पाने से क्या लाभ हुआ ? हे बालको ! मल-मूत्ररूप इस अत्यंत अपवित्र शरीर का अहंकार त्यागकर एक आत्मा - विष्णु को ही पवित्र जानो । अंदर-बाहर आत्मा ही है, इस आत्मा का न माता है न पिता है, न भ्राता है न पुत्र है, न इस आत्मा का वर्ण है न आश्रम है, न बाल्य आदि अवस्थाएँ हैं; ये सब शरीर के धर्म हैं, आत्मा के नहीं ।

आत्मा नित्य, निर्लेप प्रकाश है । उपाधि[2] से

---

१. यौन इच्छाओं और उदरपूर्ति में लगकर
२. उपाधि माने वह आरोपित वस्तु जो मूल वस्तु को छिपाकर उसको और की और या किसी विशेष रूप में दिखा दे । जैसे - आकाश असीम और निराकार है परंतु घट और मठ की उपाधियों से सीमित और भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतीत होता है ।

बापूजी जरूर निष्कलंक बरी होंगे

- श्री प्रदीपभाई शास्त्री, प्रसिद्ध कथा-प्रवक्ता

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू विश्व के आत्मा हैं। जिन लोगों को पता नहीं है वे चूने का पानी कामधेनु का दूध समझकर पी रहे हैं। जो मीडिया की बातों में आ रहे हैं उनको यह पता नहीं है। जिन विदेशियों ने बापूजी को बदनाम करने के लिए धन लगाया है वे लोग चाहते हैं कि बापूजी कभी बाहर नहीं आने चाहिए।

बापूजी धर्म की ध्वजा हैं, साक्षात् महाकाल हैं और साक्षात् नारायण हैं। हम कुम्भ में गये तो वहाँ हमने छोटे-छोटे बच्चों के हाथों में तख्तियाँ देखीं जिनमें लिखा था 'बापूजी निर्दोष हैं!' और उन्होंने कहा कि 'हमें गर्व है कि हम बापूजी के शिष्य हैं।' यह देखकर मेरा रोम-रोम खिल गया। ऐसे महापुरुषों के शिष्यों के छोटे-छोटे बच्चों की चरणधूलि भी हमारे सिर पर गिर जाय तो हम भाग्यशाली हो जायें। बापूजी के शिष्य सामान्य नहीं हैं।

अब भारत विश्वगुरु होकर रहेगा। इसे कोई रोक नहीं सकता है। और बापूजी जरूर निष्कलंक बरी होंगे। जिस तरह से बापूजी को अंदर ले जाया गया वह देखकर यदि कोई वास्तव में सनातनी है, हिन्दू है और धर्म को जाननेवाला है, उसने श्रीरामचरितमानस, भगवद्गीता, श्रीमद्भागवत पढ़ी है तो उसके हृदय में बिल्कुल आग लगी होगी। यदि आग नहीं लगी तो समझो कि वह भारत का सबसे बड़ा शत्रु है। क्योंकि बापूजी जैसे महापुरुष ने पिछले ६० वर्षों में समाज को क्या नहीं दिया!

हिन्दू बँटे हुए हैं। अन्य लोग तो आपस में संगठित हो जाते हैं लेकिन हमारे भीतर ही कुछ लोग ऐसे हैं जो छोटे-छोटे स्वार्थ के कारण हिन्दुओं को नोचना चाहते हैं।

बापूजी जब से कारागार गये तब से मेरे व्यासपीठ पर प्रणाम करने अगर कोई बड़ा नेता आता है तो मुझे बहुत डर लगता है कारण कि उनमें से कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए, ऐश्वर्य पाने के लिए व्यासपीठ का दुरुपयोग करते हैं। १२ वर्ष कोई कम होते हैं क्या ? १२ वर्ष में क्या कुछ नहीं हो जाता !

बापूजी हमारे भारत की पूँजी हैं, हमारा धन हैं, उनका ज्ञान अमोघ है। मैंने जगह-जगह जाकर कथाकारों को बोला कि 'बापूजी के बारे में बोलिये।' परंतु इतने बड़े लोगों से कौन वैर ले ? इसलिए बेचारे बोल नहीं पाते।

हम ऐसा घोष करें कि बापूजी निष्कलंक बाहर आयें और आनेवाली पीढ़ी में से कोई भी सनातन धर्म के ऐसे किन्हीं महान संत को अंदर डालने की हिम्मत न करे।

卐

मृत्यु यह नहीं देखती कि...

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्॥

'कल किये जानेवाले कार्य* को आज ही कर डालना चाहिए और सायंकाल किये जानेवाले कार्य को प्रातःकाल ही कर लेना चाहिए कारण कि मृत्यु यह नहीं देखती कि इसका कार्य पूरा हुआ है या नहीं।'

(महाभारत, शांति पर्व : १७५.१५)

* ध्यान रहे कि हमारा कार्य संत एवं शास्त्र सम्मत हो।

५ विकारों में से कौन-सा विकार जल्दी से नरक में ले जाता है ?

२० अक्टूबर को महावीर स्वामी निर्वाण दिवस है। पूज्य बापूजी के सत्संग में उनके जीवन का एक ज्ञानवर्धक प्रसंग आता है :

कुछ भिक्षुक बैठे थे। एक भिक्षुक ने कहा : ''महावीर स्वामी आयें उससे पहले हम लोग कुछ चर्चा कर लेते हैं। नरक में ले जानेवाले ५ विकार हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार यह सब जानते हैं। परंतु काम ज्यादा खतरनाक है कि क्रोध, क्रोध ज्यादा खतरनाक है कि लोभ, लोभ ज्यादा खतरनाक है कि मोह, मोह ज्यादा खतरनाक है कि अहंकार ? इन ५ दुर्गुणों में से कौन-सा दुर्गुण जल्दी नरक में ले जायेगा ?''

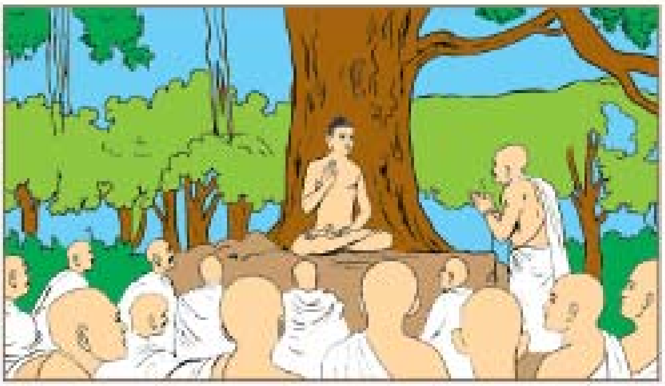

किसीने क्रोध को सबसे खतरनाक बताया कारण कि क्रोध आता है तो शांति भंग हो जाती है। किसीने बताया कि ''काम आता है तो व्यक्ति की अक्ल-होशियारी, साहब का साहबपना सब छू हो जाता है।'' किसीने कहा कि ''लोभ सब पापों का बाप होता है।'' किसीने कहा : ''मोह सभी व्याधियों का मूल है।''

खूब चर्चा चली लेकिन कुछ निर्णय नहीं हो पाया । आखिर महावीर स्वामी आये तो उनसे सबने निवेदन किया कि ''भंते ! ५ विकारों में से कौन-सा विकार जल्दी से नरक में ले जाता है अथवा संसार-सागर में डुबा देता है ?''

महावीर स्वामी ने घड़ीभर अपने-आपमें आराम पाया, विश्रांति पायी । सुख की अपेक्षा विश्रांति बहुत ऊँची चीज है । विषयों का सुख व्यक्ति को तुच्छ बना देता है । ऐन्द्रिक सुख की आकांक्षा व्यक्ति को अशांति और दुःखों की तरफ ले जाती है और शांति की इच्छा सच्चे सुख की तरफ, परमात्मा की तरफ ले जाती है । महावीर स्वामी शांत थे, मौन थे । भिक्षुक निहारते रहे फिर एक उठा, बोला : ''भंते ! इन पाँच विकारों में से सबसे ज्यादा बलवान कौन-सा है ?''

महावीर स्वामी ने कहा : ''कोई तुम्बे से नदी पार करता हो और उसमें पाँच सुराख हों तो कौन-सा सुराख उसको डुबायेगा ? सभी अपनी-अपनी जगह पर काफी हैं। ऐसे ही पाँचों विकारों में से हर विकार नरक में ले जाने के लिए अपने-आपमें पर्याप्त है।''

हम विकारों का सहारा तब लेते हैं जब हमारा मन सुख के पक्ष में जाता है।

मानो-न मानो यह हकीकत है ।
इश्क इंसान की जरूरत है ॥
खुशी इंसान की जरूरत है ॥

सुख आपकी आकांक्षा है, निर्विकारी पवित्र प्रेम आपकी जरूरत है । आप सुख लीजिये यह कोई सिखाता नहीं है कारण कि आपका आत्मा वास्तव में सुखस्वरूप परमात्मा का ही अविभाज्य स्वरूप है। इसलिए जीवमात्र सुख की इच्छा करता है । लेकिन इन्द्रियगत, संयोगजन्य जो सुख है वह व्यक्ति को क्षणिक सुख में ले जाकर अंत में नरकों की यात्रा करवाता है। अगर संतों-महापुरुषों के मार्गदर्शन-अनुसार सत्संग, सेवा, संयम और साधन-भजन के नियम द्वारा व्यक्ति असली सुख की तरफ बढ़ता है तो मोक्ष का भागी हो जाता है।

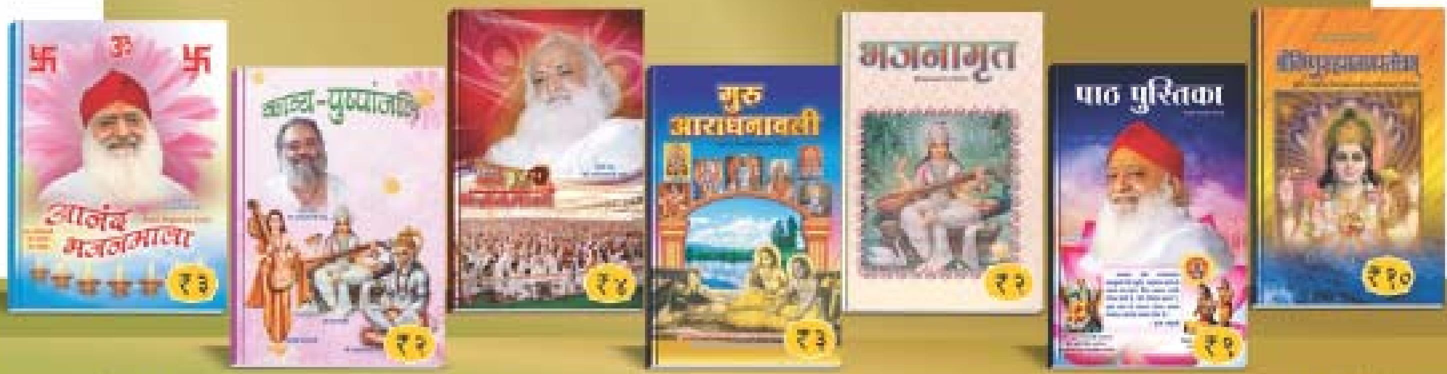

भजन, आरती, स्तोत्र-पाठ संबंधी सत्साहित्य

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य !

तनाव, दुःख, चिंता, अशांति को दूर कर भगवद्भक्ति में सराबोर कर देनेवाले भजन, पाठ, आरती आदि का संग्रह

पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश / स्पेशल च्यवनप्राश

केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

❊ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ❊ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ❊ हृदय व मस्तिष्क पोषक ❊ फेफड़ों के लिए बलप्रद ❊ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ❊ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ❊ क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ❊ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बलता में विशेष हितकर ।

पुनर्नवा अर्क

पुनर्नवा अर्क शरीर के कोशों को नया जीवन प्रदान करनेवाली श्रेष्ठ रसायन-औषधि है । यह गुर्दों (kidneys) व यकृत (liver) के समस्त रोग, पेट के रोग, सूजन, रक्ताल्पता (anaemia), पीलिया, आमवात, संधिवात, बवासीर, भगंदर, दमा, खाँसी, गुर्दों व पित्ताशय की पथरी, मधुमेह (diabetes), स्त्रीरोग, त्वचा-विकार, हृदयरोग व नेत्र-विकारों में बहुत लाभदायी है ।

तुलसी अर्क

स्मृतिवर्धक, रक्तशुद्धिकर व विविध रोगों में लाभदायी

तुलसी अर्क स्मृति, सौंदर्य व बल वर्धक तथा कीटाणु और विष नाशक है । यह हृदय के लिए हितकर तथा ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक है । यह रक्त में से अतिरिक्त स्निग्धांश (LDL) को हटाकर रक्त को शुद्ध करता है । सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार, दस्त, उलटी, हिचकी, दमा, मुख की दुर्गंध, मंदाग्नि, पेचिश, कृमि, स्मृतिह्रास आदि रोगों में लाभदायी है ।

भीमसेनी कपूर

१००% शुद्ध व ऑर्गेनिक

❊ औषधीय प्रयोग हेतु यह सर्वोत्तम कपूर है । ❊ नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और वातावरण को शुद्ध करने के लिए भीमसेनी कपूर का उपयोग श्रेष्ठ बताया गया है ।

कपूर

❊ पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में यह उपयोगी है । ❊ वातावरण को शुद्ध करनेवाला है । ❊ संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

ऋषियों के अमृतमय संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में लगे कर्मयोगी

ऋषि प्रसाद सम्मेलन एवं अभियान

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Abd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment,
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Sep 2025

विद्यार्थियों में हुआ सुसंस्कारप्रद नोटबुकों का वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें । आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें ।

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से

दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम के पवित्र, आध्यात्मिक वातावरण में

दीपावली अनुष्ठान एवं ध्यान योग शिविर २० से २६ अक्टूबर विद्यार्थी व बड़े सभी लाभ लें ।

❊ सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम । दूरभाष : (०७९) ६१२१०७४९/५०/८८८, ७६००३२५६६६ ❊ ट्रेन के आरक्षण शुरू हो चुके हैं, जल्द ही टिकट बुक करायें ।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कॅन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मेन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी